• बाल कविता...

आई है बरखा!

मस्ती-सी छलकाती
आई है बरखा,
बिजली का झूल गया
रेशमी अंगरखा!
कुहरे की नरम-नरम
चादरें लपेटे,
सूरज भी दुबक गया
धूप को समेटे।
कैसे टिकता, आखिर
बोझ था उमर का!
बादल की बादल से
हो गई लड़ाई,
बूंदों से बूंद लड़ी
कौन-सी बड़ाई?
आपस में लड़कर ही
अपना बल परखा!
कोस रही सावन को
अपने ही मन में,
पानी का ढेर लगा
सारे आंगन में।
दादी मां कात न पाई
आज चरखा!
हवा चली, माटी की
खुशबू को छूकर,
हरियाली उतरी है
पेड़ों के ऊपर।
धरती का सूखा भी
चुपके-से सरका!
मस्ती-सी छलकाती
आई है बरखा!

■ योगेन्द्र दत्त शर्मा

• चुटकुले...

लड़का परीक्षा हॉल में परेशान बैठा था।
टीचर – क्या हुआ प्रश्न कठिन हैं क्या?
लड़का – नहीं सर, मैं तो ये सोच रहा हूं कि इस प्रश्न का उत्तर किस जेब में है।

पत्नी– मुझे एक कुत्ता खरीदना है
पति– तुम्हें कुत्ता ही क्यों खरीदना है?
पत्नी– ताकि तुम्हारे ऑफिस जाने के बाद कोई तो मेरे आगे पीछे दुम हिलाने वाला हो।

मनोज– पापा, आप अंधेरे से डरते हैं...?
पापा– नहीं बेटा...!
मनोज– बादल, बिजली और शोर से...?
पापा– बिल्कुल नहीं...!
मनोज– इसका मतलब है पापा, आप मम्मी को छोड़कर किसे से नहीं डरते हैं।

• जानकारी...

रहस्यमयी पेड़

दुनियाभर में लाखों प्रजाति के पेड़-पौधे पाए जाते हैं। इन सभी पेड़-पौधों की अपनी अलग-अलग खासियत होती है। कुछ पेड़ मेडिकल साइंस, औषधी, फल के लिए जाने जाते हैं, तो कुछ पेड़ अपने विचित्र बनावट के कारण जाने जाते हैं। लेकिन आज हम आपको कुछ ऐसे पेड़ के बारे में बताने वाले हैं, जिन्हें सबसे अजीबोगरीब पेड़ कहा जाता है। जानिए आखिर कहां पर ये पेड़ पाए जाते हैं।

दुनियाभर में कई अजीबोगरीब चीजें हैं, जिन पर विश्वास करना इंसानों के लिए मुश्किल होता है। आपने अब तक कई रहस्यमयी किले, झरने, नदियों और जगहों के बारे में सुना होगा, लेकिन आज हम आपको दुनियाभर के अजीबोगरीब पेड़ों के बारे में बताएंगे। सबसे पहले वॉकिंग पाम पेड़ के बारे में जानते हैं। बता दें कि यह पेड़ अमूमन दक्षिण अमेरिका में देखने को मिलता है। इसका वैज्ञानिक नाम 'सोक्रेटिया एक्सोराइजा' है। इस पेड़ के बारे में कहा जाता है कि यह हर साल अपनी जगह से 20 मीटर तक आगे खिसक जाता है।

इसके बाद मेथुसेलह पेड़ को दुनिया के सबसे पुराने पेड़ के नाम से जाना जाता है। ये मेथुसेलह पेड़ अमेरिका के पूर्वी कैलिफोर्निया के सफेद पहाड़ों में पाया जाता है। इन पेड़ों की उम्र 5,000 साल तक होती है और इन्हें किसी भी नुकसान से बचाने के लिए वन अधिकारियों द्वारा इनका स्थान अज्ञात रखा जाता है।

बता दें कि पोषमवुड पेड़ को सबसे खतरनाक पेड़ भी कहा जाता है। इसका कारण भी विचित्र है। बता दें कि उत्तर और दक्षिण अमेरिका समेत अमेजन वर्षावन में पाए जाते हैं। पोषमवुड खतरनाक होने के साथ-साथ किसी को भी हैरान कर सकता है, क्योंकि इन पर उगने वाले फलों में पकने के बाद एक बम की तरह विस्फोट हो जाता है। ये फल के फूटते के बाद इसके बीज लगभग 257 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवा में फैल जाते हैं। इतना ही नहीं अगर कोई इंसान इसकी चपेट में आता है, तो वो घायल हो सकता है।

ड्रैगन पेड़ अपनी बनावट की वजह से दुनियाभर में फेमस है। इस पेड़ का आकार किसी ड्रैगन की तरह नहीं है, बल्कि कुछ बारिश के छातों जैसा दिखता है। यह अनोखा पेड़ मुख्य रूप से कैनरी आईलैंड और मैक्सिको में पाया जाता है और यहां के स्थानीय लोगों का कहना है कि ये काफी धार्मिक महत्व रखता है.इन पेड़ की उम्र तकरीबन 650 से 1000 साल के बीच होती है।

सेर्बेरा ओडोलम पेड़ को सुसाइडल पेड़ भी कहा जाता है। क्योंकि ये बेहद खतरनाक और जहरीला होता है। ये पेड़ एशिया के कई देशों समेत भारत में पाए जाते हैं। इन पेड़ के फल के कारण इसे 'सुसाइडल पेड़' के नाम से जाना जाता है, क्योंकि ये बहुत ही जहरीला होते हैं। जानकारी के मुताबिक कोई भी इंसान गलती से इस पेड़ के फल को खाता है, इसके तुरंत बाद ही उल्टियां होने और हृदय गति बढ़ने जैसी समस्या शुरू हो जाती है। स्थिति गंभीर होने पर जान भी जा सकती है।

• गोनू झा

गुलाब की सुगन्ध

महाराज अपने मंत्री से कुछ बातें करते रहे, कुछ निर्देश देते रहे। गोनू झा उन दोनों के साथ टहलते रहे। मंत्री मन ही मन खुश हो रहा था कि महाराज गोनू झा को महत्त्व नहीं दे रहे हैं। मंत्री को निर्देश दे चुकने के बाद महाराज अचानक मंत्री से कहने लगे –

'मंत्री जी, इस पुष्पवाटिका में मैं जब कभी आता हूँ तो मुग्ध हो जाता हैं। जिस पौधे के पास जाओ, उसी पौधे से एक विशेष सुगंध का अहसास मन में भर जाता है...

एक दिन मिथिला नरेश अपनी पुष्पवाटिका में टहल रहे थे। उनके साथ थे उनके मंत्री।

किसी कारणवश गोनू झा महाराज से मिलने आए तो महाराज ने उनको भी पुष्पवाटिका में ही बुला लिया।

महाराज अपने मंत्री से कुछ बातें करते रहे, कुछ निर्देश देते रहे। गोनू झा उन दोनों के साथ टहलते रहे। मंत्री मन ही मन खुश हो रहा था कि महाराज गोनू झा को महत्त्व नहीं दे रहे हैं। मंत्री को निर्देश दे चुकने के बाद महाराज अचानक मंत्री से कहने लगे -'मंत्री जी, इस पुष्पवाटिका में मैं जब कभी आता हूँ तो मुग्ध हो जाता हैं। जिस पौधे के पास जाओ, उसी पौधे से एक विशेष सुगंध का अहसास मन में भर जाता है। लेकिन मुझे इन सभी फूलों में गुलाब अधिक पसन्द है। क्या ऐसा कोई उपाय है कि मैं जिस पौधे के पास जाऊँ, वहाँ से मुझे गुलाब की सुगन्ध ही मिले?'

उसकी समझ में नहीं आया कि वह महाराज को क्या उत्तर दे। भला कचनार से गुलाब की सुगन्ध कैसे आ सकती है? महाराज को यह क्या सूझी? अचानक मंत्री को आई बला को टालने की तरकीब सूझ गई। उसने तुरन्त महाराज से कहा -'महाराज! गोनू झा के रहते हुए इस प्रश्न का उत्तर मैं दूँ, उचित नहीं लगता!'

वे मन ही मन मुस्कुराए और फिर गोनू झा की ओर देखा।

गोनू झा ने एक पल भी गँवाए बिना कहा - 'महाराज! शाम ढल रही है। आपको ठंड लग सकती है। मैं तुरन्त आपका दुशाला लेकर आता हूँ,' और महाराज की स्वीकृति के बिना ही मुड़े और महल की ओर चले गए।

महाराज मंत्री के साथ पुष्पवाटिका में टहलते रहे, जैसे पहले टहल रहे थे।

थोड़ी ही देर में गोनू झा मंद -मंद मुस्कुराते हुए वहाँ आए। महाराज के पास रुके और सम्मानपूर्वक दुशाला उनके कंधों पर फैलाकर डाल दिया। महाराज ने दुशाले के एक छोर को खुद सीने से लपेटते हुए दूसरे छोर को अपने कंधे पर रख लिया। उस समय महाराज गुलाबों के बीच ही थे। गुलाब की सुगंध से सराबोर!

थोड़ी देर वहाँ टहलते रहे महाराज और उसके बाद दूसरे फूलों की ओर बढ़ते हुए उन्होंने गोनू झा से पूछा -'पंडित जी! क्या कोई उपाय है कि मैं जिन फूलों के पास जाऊँ उनसे गुलाब की सुगंध ही आए?'

गोनू झा मुस्कुराए और बोले -'उत्तर मिल जाएगा महाराज!'

थोड़ी देर में ही वे लोग पुष्पवाटिका के ऐसे छोर पर पहुँच गए जहाँ बेला-जूही- चमेली जैसे श्वेत पुष्पों की निराली छटा बिखरी हुई थी मगर महाराज को वहाँ भी गुलाब की सुगन्ध मिल रही थी। भीनी-भीनी सुगंध! महाराज ने मंत्री से पूछा -'इन फूलों से कैसी सुगन्ध आ रही है ?'

मंत्री ने कहा -मिली -जुली सुगन्ध!'

महाराज ने गोनू झा से भी सवाल दुहराया।

गोनू झा महाराज के पूछने का अर्थ समझ गए। उन्होंने कहा -'महाराज, फूलों में तो वही सुगन्ध है जो नैसर्गिक रूप से उनमें विद्यमान है, लेकिन आप जहाँ कहीं भी जाएँगे वहाँ आपको गुलाब की भीनी सुगन्ध मिलेगी। आपने आज्ञा दी थी कि मैं कुछ ऐसा उपाय बताऊँ कि आप इस पुष्पवाटिका में जहाँ कहीं भी जाएँ, आपको गुलाब की सुगन्ध मिले। मैंने वह उपाय कर दिखाया है।'

अब तक मंत्री गोनू झा को इसी उपाय के मामले में मुँह लटकाए देखने की उम्मीद कर रहा था लेकिन गोनू झा की बातें सुनकर उसके चेहरे का रंग उतर गया ।

महाराज ने पूछा -'क्या सच आपने ऐसा कुछ किया है? मैं अब भी गुलाब की सुगन्ध का अनुभव कर रहा हूँ।'

गोनू झा ने मुस्कुराते हुए कहा -'मैंने कुछ नहीं किया है। बस, थोड़ा-सा गुलाब का इत्र आपके दुशाले पर लगा दिया है।'

• रोचक...

अमेजन फोरेस्ट

अमेजन के जंगल को दुनिया का सबसे खतरनाक और सुदंर जंगल भी कहा जाता है। इसका कारण ये है कि यहां दुनिया के सभी खतरनाक जानवर मौजूद हैं। वहीं जैव–विविधताएं (बायोडायवर्सिटी) का भंडार है। यहां पर लाखों प्रजाति के पेड़–पौधे भी पाए जाते हैं। कुछ पेड़ पौधे तो ऐसे हैं, जो दुनिया के किसी और देश में नहीं पाए जाते हैं। जानकारी के मुताबिक यहां 390 अरब पेड़ हैं, जिसमें 16 हजार से ज्यादा उनकी प्रजातियां हैं। इतना ही नहीं, यहां 400 से ज्यादा आदिम जनजातियां भी रहती हैं। इन जनजातियों का बाहरी दुनिया से किसी तरह का संबंध नहीं है। यहां की बुलेट चींटिया भी काफी खतरनाक होती हैं। इस जंगल में मकड़ियों के 3 हजार से ज्यादा प्रजातियां पाई जाती हैं, जिनमें ज्यादातर जहरीली होती हैं। इनमें टारान्टुला मकड़ी को सबसे खतरनाक माना जाता है।

• मौत की नदी..

लद्दाख में बहने वाली श्योग नदी के नाम के पीछे दो अलग–अलग कारण बताए जाते हैं। पहला कारण ये है कि इस नदी का नाम श्योक तिब्बती भाषा के शग और ग्योग से लिया गया है। इसमें शग का मतलब बजरी और ग्योग का मतलब फैलाने से होता है। ये नदी बाढ़ आने पर भारी मात्रा में बजरी इकट्ठा करती है। जिसके चलते इसे बजरी फैलाने वाली यानी श्योग कहा जाता। श्योक नदी को कई लोग 'मौत की नदी' के रूप में भी जानते हैं। इसका रिश्ता पश्चिमी चीन के उइगर इलाके से बताया जाता है। कहा जाता है कि उइगर भाषा (यारकंदी) में श्योक का मतलब मौत से होता है।